16

अपराजिता

रचनाकार/कवि का परिचय : शिवानी। जन्म — 17 अक्टूबर 1903 ई0, राजकोट, गुजरात। मृत्यु — मृत्यु 21 मार्च 2003 ई0, प्रमुख रचनाएँ :— कृष्णकली, चौदह फेरे, भैरवी, कँजा, चम्पा इत्यादि।

अधिगम प्रतिफल :

❖ पढ़ी गई सामग्री पर चिंतन करते हुए समझ के लिए प्रश्न पूछते हैं।

❖ पढ़कर अपरिचित परिस्थितियों और घटनाओं की कल्पना करते हैं और उनपर अपने मन में बननेवाली छवियों और विचारों के बारे में मौखिक/सांकेतिक भाषा में बताते हैं।

❖ अपने अनुभवों को अपनी भाषा—शैली में लिखते हैं।

पाठ का परिचय— प्रस्तुत रचना में लेखिका ने एक ऐसी दिव्यांग महिला से परिचय कराया है जिसमें असीम धैर्य, दृढ़ इच्छाशक्ति और अद्भुत लगन है। अपनी विकलांगता पर विजय प्राप्त कर ही सफलता का शिखर छू लेती है। विषम और विकट परिस्थातियों में भी अपराजिता बनी रहने वाली अपराजिता का जीवन कठिन परिस्थितियों और चुनौतियों का साहसपूर्ण तरीके से सामना करने के लिए प्रेरित कराता है। साथ—ही—साथ इसमें एक ऐसी दृढ़निश्चयी, संघर्षशील, साहसी तथा ममतामयी माँ से भी हमारा परिचय होता है जो अपनी दिव्यांग पुत्री के संघर्ष में हर कदम पर साथ रहती है। यह रचना बताती है कि एक दिव्यांग व्यक्ति में भी असीम क्षमता होती है। जरूरत है तो सिर्फ उनके अनुकूल वातावरण तैयार कर उनका साथ देने की ताकि वे अपनी योग्यता सिद्ध कर सकें।

सार संक्षेप/सारांश

''कभी—कभी विधाता हमें ऐसे विलक्षण व्यक्ति से मिला देता है,जिसे देख हमें अपने जीवन की रिक्तता बहुत छोटी लगने लगती है। हमें अब लगता है कि भले ही उस अंतर्यायी ने हमें जीवन में कभी अकस्मात दंडित कर दिया हो किंतु हमारे किसी अंग को हमसे वंचित नहीं किया।'' फिर भी अपनी कठिन परिस्थितियों में कई बार हम भगवान को दोषी ठहराते हैं। लेकिन, डॉ. चंद्रा को देखकर लगता

© JCERT not to be republished

है कि जीवन की कठिनतम परिस्थिति में भी साहस, धैर्य और निरंतर कोशिश से व्यक्ति प्रगति कर सकता है।

चंद्रा को बचपन में ही पोलियो हो गया था। गले से नीचे उसका पूरा शरीर बेजान हो गया था। उनकी माता श्रीमती टी. सुब्रह्मण्यम् ने हिम्मत नहीं हारी। उन्होंने एक सर्जन से एक वर्ष तक चंद्रा का इलाज करावाया। जिससे उनकी ऊपरी धड़ में हरकत आ गई। निचला हिस्सा बेजान ही रहा। माँ ने उन्हें सहारा देकर उठना–बैठना सिखाया चंद्रा बहुत ही कुशाग्र बुद्धि की थी। पाँच साल से उसकी पढ़ाई शुरू हुई। माता ने पूरी लगन से उसे पढ़ाना– लिखना शुरू किया। बड़ी ही मिन्नते करने के बाद चंद्रा को बेंगलुरू के माउंठ कारमेल में प्रवेश मिला लेकिन स्कूल में चंद्रा को एक क्लास से दूसरे क्लास ले जाने की समस्या थी। चंद्रा की माँ ने ही स्कूल में उनका साथ दिया। चंद्रा ने प्रत्येक परीक्षा में सर्वोच्च स्थान प्राप्त किया। उसे स्वर्ण पदक मिले। प्राणी शास्त्र में एम. एस. सी. किया। जिसमें चंद्रा ने पहला स्थान प्राप्त किया। प्रोफेसर सेठना के निर्देशन में पाँच साल तक शोध कार्य किया। अंत में उन्हें विज्ञान में डॉक्टरेट मिल गई।

डॉ० चंद्रा कविवाएँ भी लिखती थी। इनमें उनकी उदासी झलकती थी। उन्होंने लेखिका को अपनी कढ़ाई–बुनाई के नमूने भी दिखाए। गर्ल गाइड में राष्ट्रपति का स्वर्ण कार्ड पाने वाली यह पहली दिव्यांग बालिका थी। चन्द्रा के अलबम के अंतिम पृष्ठ में है, उनकी जननी का बड़ा सा चित्र, जिसमें वे जे०सी० बेंगलुरू द्वारा प्रदत्त एक विशेष पुरस्कार ग्रहण कर रही हैं। उनका विश्वास दर्शाता है कि "ईश्वर सब द्वार एक साथ बंद नहीं करता। यदि एक द्वार बंद करता भी है, तो दूसरा द्वार खोल भी देता है।"

(गद्यांश की व्याख्या –1)

कभी–कभी अचानक ही विधाता हमें ऐसे विलक्षण........................ विधाता को कोसकर नहीं। (पृ.सं.–119)

शब्दार्थ –

अपराजिता – जो पराजित न हुई हो।

विधाता – ईश्वर

विलक्षण – विशेष लक्षणों वाला

रिक्तता – खालीपन

अंतर्यामी – अंदर की बात जानने वाला

© JCERT not to be republished

अभिशप्त	–	शाप से ग्रस्त
काया	–	शरीर
नतमस्तक	–	झुका हुआ सिर
कोसकर	–	बुरा–भला कहकर

व्याख्या –

दिव्यांगो की मार्मिक स्थिति का चित्रण करते हुए लेखिका शिवानी लिखती हैं कि कभी–कभी हमें ऐसे अद्भुत क्षमता वाले लोग मिलते हैं जिन्हें देखकर हमें अपनी कमियाँ छोटी लगने लगती हैं। उस समय यही लगता है कि भगवान ने चाहे हमें जो विपत्ति दी हो लेकिन हमसे हमारा कोई अंग न छीनकर उन्होंने हम पर बड़ी कृपा की है। फिर भी जब कोई विपत्ति आती है हम भगवान को कोसने लगते हैं। लेखिका ने एक विकलांग लड़की को देखा, जिसने खुशी से यातना झेलकर जीवन में संघर्ष झेला, सफलता पाई और ईश्वर को कभी नहीं कोसा।

प्रश्न (1)– 'लेखिका ने विलक्षण व्यक्तित्व' किसे कहा है ?

प्रश्न (2)– जीवन की रिक्तता से क्या तात्पर्य है ?

प्रश्न (3)– साधारणतः लोग जीवन की विपरीत परिस्थिति में विधाता को ––––––––– हैं। (कोसते /धन्यवाद करते)

प्रश्न (4)– डॉ० चंद्रा विधाता के द्वारा दिए अभिशप्त काया को कैसे झेल रही हैं?

(गद्यांश की व्याख्या –2)

''उसकी कोठी का अहाता एकदम हमारे बँगले के अहाते से ... उसने किस अद्भुत साहस से नियति को अँगूठा दिखा अपनी थीसिस पर डॉक्टरेट ली होगी।'' (पृ.सं. –120–121)

शब्दार्थ –

पौढ़ा	–	प्रौढ़ स्त्री	व्हील चेयर –	पहिए वाली विशेष कुर्सी
अमानवीय	–	जो मानवीय न हो	निष्प्राण–	जिसमें प्राण न हो

© JCERT not to be republished

विच्छिन्न	–	अलग लेना	नूर मंजिल	–	नशा मुक्ति केंद्र
विषाद	–	दूख	जिजीविषा	–	जीने की इच्छा

व्याख्या –

लेखिका शिवानी अपने घर से सटे मकान में रहने वाली डॉ० चंद्रा के बारे में बताती हैं कि जब उन्होंने पहली बार डॉ० चंद्रा को अपने बंगले में कार से उतरते देखा तो वे हैरान रह गई। उनकी माँ ने कार का दरवाजा खोलकर उसके सामने व्हील चेयर रख दिया। बिना किसी की सहायता लिए अपने निर्जीव धड़ को उतारकर, बैशाखियों के सहारे वे व्हील चेयर पर बैठ गई और खुद ही उसे चलाकर घर के अंदर गई। लेखिका हर दिन निश्चित समय पर उस बड़े से घर से अनके आने–जाने का दृश्य देखती रहती थी। धीरे–धीरे उत्सुकतापूर्वक लेखिका का उनसे परिचय हुआ और उनकी कहानी सुनकर वे हैरान रह गई। उनके हौसले को देखकर उन्हें उस युवक की याद आई जिसका एक हाथ ट्रेन से कट जाने पर वह अवसाद में चला गया। लेखिका को लगा कि उस युवक को अवसाद या नशा के बजाय ऐसी लड़की से प्रेरणा लेनी चाहिए जिसका निचला धड़ बिल्कुल काम नहीं करता लेकिन चेहरे पर जरा सा भी दुख नहीं। आँखों में उत्साह की चमक जीने की भरपूर इच्छा और आगे बढ़ने की चाहत। उनके प्रश्न लेखिका को अचंभित कर देते हैं। ड्रग रिसर्च इंस्टीट्यूट में माइक्रोबायलोजी से संबंधित सामग्री मिल सकेगी ? हवाई के ईस्ट–वेस्ट सेंटर में कोई फेलोशिप मिल सकती है ? छोटी सी दुर्घटना हो जाय, हाथ–पैर टूट जाए तो हम निराश हो जाते हैं, लेकिन डॉ० चंद्रा आई० आई० टी० मद्रास में काम कर रही हैं। अपनी थीसिस पर डॉक्टरेट लेना कितने परिश्रम का कार्य रहा होगा।

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दें :–

प्रश्न (5)– "लेखिका ने नशे की गोलियाँ खाने लगा।" किस व्यक्ति के लिए कहा और क्यों?

प्रश्न (6)– लेखिका ने डॉ० चंद्रा को सबसे पहले कहाँ देखा?

प्रश्न (7)– जीवन में किसने हथियार डाल दिए?

प्रश्न (8)– डॉ० चंद्रा कहाँ काम कर रही थीं?

(गद्यांश की व्याख्या – 3)

"मैडम मैं चाहती हूँ कोई मुझे सामान्य–सा सहारा भी न दें।........................ क्षत–विक्षत शरीर में असंख्य घाव आभामंडित भव्य मुदा। (पृ.सं. – 121–123)

© JCERT not to be republished

शब्दार्थ –

यातनाप्रद	–	कष्टप्रद
सहिष्णु	–	सहन करने वाला
सर्वांग	–	पूरी शरीर में
आर्थोपैडिक सर्जन	–	हड्डी के इलाज से संबंधित
जिह्वाग्र	–	जीभ के आगे का भाग
जिरह–बख्तर	–	युद्ध की विशेष पोशाक
क्षत–विक्षत	–	बुरी तरह चोट खाया हुआ, चूर–चूर

व्याख्या –

डॉ० चंद्रा चाहती थीं कि कोई उन्हें सामान्य सा भी सहारा न दें यानी कि वे आत्मनिर्भर बन सकें। उन्होंने अपनी प्रयोगशाला को अपने अनुरूप बना लिया था जिससे वे आसानी से उसका उपयोग कर सकें। अपनी कार के लिए भी उन्होंने एक डिजाइन बनाया था। लेखिका यह अनुभव कर पाती हैं कि कितनी यातना से उन्होंने इस सब काम के लिए अपने–आप को तैयार किया होगा। उनके प्रोफेसर इस बात को स्वीकार करते हैं कि चंद्रा की लड़ाई अकेले की नहीं थी। उनकी माँ श्रीमति सुब्रह्मण्यम भी लगातार अपनी बेटी के साथ रहीं और 1976 में उनकी यह तपस्या पूरी हुई जब चंद्रा को डॉक्टरेट की डिग्री मिली।

उनकी माँ बताती हैं कि सामान्य ज्वर में ही चंद्रा को लकवा मार गया। जिससे उसका पूरा शरीर स्थूल हो गया। उनके गर्भ में उनका बेटा आ चुका था। लेकिन एक पल के लिए उन्होंने यह नहीं माना कि चन्द्रा बोझ है। वे उसके जीवन के लिए प्रार्थना करती रहीं। एक आर्थोपैडिक के इलाज से ऊपरी धड़ में हरकत आ गई। हाथ हिलने लगे, अँगुलियाँ हरकत करने लगीं। धीरे–धीरे वे सहारा लेकर बैठने लगी। चन्द्रा की बुद्धि से वह बहुत प्रभावित हैं। मिशन स्कूल में मदर ने कहा कि क्लास–क्लास ले जाना दिक्कत होगी तो उनकी माँ हमेशा स्कूल में उनके साथ रहती थी। प्रत्येक परीक्षा में सर्वोच्च स्थान प्राप्त कर चंद्रा ने स्वर्ण पदक जीते। बी. एस. सी., एम. एस. सी. , किया। पाँच वर्ष तक प्रोफेसर सेठना के निर्देशन में शोधकार्य किया। वह अपनी लेदर जैकेट पहन कर हँसते हुए अपने प्रयोगशाला में काम करते हुए वे बहुत उत्साहित करने वाली लगती हैं।

© JCERT not to be republished

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दें :–

प्रश्न (9)– डॉ० चंद्रा ने कौन–कौन सी उपाधियाँ प्राप्त की थीं?

प्रश्न (10)– गर्दन से नीचे अंचल होने पर चंद्रा के लिए डॉक्टरों ने क्या कहा? बताइए।

प्रश्न (11)– ''मैंने विधाता से ये नहीं कहा कि प्रभो, इसे उठा लो।'' चंद्रा की माता ने ऐसा भाव कब व्यक्त किया?

(गद्यांश की व्याख्या – 4)

''मैंने जब वे कविताएँ देखीं, तो आँखे भर आई। .... यदि एक द्वार बंद करता भी है, तो दूसरा भी खोल देता है।''

शब्दार्थ –

जननी – माता पुष्पवेणी – फूलों की माला

व्याख्या –

लेखिका शिवानी को डॉ० चंद्रा अपनी लिखी कविताएँ दिखाती हैं। उनकी कविता पढ़कर लेखिका को एहसास हुआ कि जो उदासी उनके चेहरे पर कभी नहीं आ पाती वह अनजाने ही इस कविता में छलक आई थी। उन्होंने अपनी कढ़ाई–बुनाई के सुंदर नमूने भी दिखाए। उनके दोनों हाथ ही जैसे दोनों पैरों के भी काम करते थे। जर्मन भाषा में डॉ० चंद्रा और उनकी माँ ने मैक्समूलर भवन से विशेष योग्यता सहित परीक्षा उत्तीर्ण की। गर्ल गाइड में राष्ट्रपति का स्वर्णकार्ड प्रदान किया गया। भारतीय एवं पाश्चात्य संगीत दोनों में उनकी समान रूचि थी। अपने पैरों पर रखकर जब वे अपनी एलबम के चित्र दिखाती हैं पुरस्कार लेते हुए, प्रधानमंत्री के साथ मुस्कुराते हुए, राष्ट्रपति को सलामी देते हुए और व्हील चेयर में लेदर की जैकेट पहने डॉक्टरेट ग्रहण करती इन सभी तस्वीरों को देखकर लेखिका यह महसूस करती हैं कि धड़ के आधे भाग में हरकत नहीं है फिर भी कैसा साहस है।

डॉ० चंद्रा चिकित्सक बनना चाहती थीं लेकिन परीक्षा में सर्वोच्च स्थान प्राप्त करने के बाद भी उन्हें मेडिकल में प्रवेश नहीं मिला। लेकिन उनके प्रोफेसर कहते हैं कि 'चिकित्सा ने जो खोया वह विज्ञान ने पाया।'

डॉ० चंद्रा के एलबम के अंतिम पन्ने पर उनकी माँ का बड़ा सा चित्र है जिसमें वे जे. सी. बैंगालोर द्वारा दिया गया 'वीर जननी पुरस्कार' ग्रहण कर रही हैं। उनकी आँखों में जैसे माँ और बेटी दोनों के दुख समाए हों। नाक में हीरे की जगमगाती लौंग, जूड़े में फूलों का गजरा अपनी बेटी की व्हील

© JCERT not to be republished

चेयर के पीछे पूरे समय साथ–साथ घूमती उनकी साहसी माँ शारदा सुब्रमण्यम यह विश्वास रखती हैं कि ईश्वर सभी द्वार एक साथ बंद नहीं करता, कोई–न–कोई रास्ता जरूर होता है।

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दें :–

प्रश्न– (12) वीर जननी पुरस्कार किसे मिला ?

प्रश्न– (13) ''ईश्वर सब द्वार एक साथ बंद नहीं करता। यदि एक द्वार बंद करता भी है, तो दूसरा द्वार खोल देता है।'' चंद्रा की माताजी ने यह बात क्यों कही ?

प्रश्न– (14) बालिका चंद्रा डॉक्टरी की पढ़ाई क्यों नहीं कर सकी?

अन्य महत्त्वपूर्ण प्रश्न :–

प्रश्न– (15) पाठ के आधार पर डॉ० चंद्रा के चरित्र की प्रमुख विशेषताएँ बताइए।

वास्तुनिष्ठ प्रश्न

प्रश्नों के उत्तर उपयुक्त विकल्प का चयन करें।

प्रश्न (16)– अपराजिता किसे कहा गया है ?

(क) श्रीमती टी सुब्रह्मण्यम (ख) प्रोफेसर

(ग) डॉक्टर (घ) डॉ० चंद्रा

प्रश्न (17)– डॉ० चंद्रा को माइक्रोबसयोलॉजी में पी. एच. डी. कब मिली ?

(क) 1976 ई. (ख) 1977 ई.

(ग) 1967 ई. (घ) 1966 ई.

प्रश्न (18)– अपराजिता में कौन –सा गुण सर्वाधिक बताया गया है ?

(क) साहस (ख) उत्साह

(ग) जिजीविषा (घ) जिज्ञासा

प्रश्न (19)– किस रोग के कारण डॉ० चंद्रा का धड़ निष्प्राण हो गया था ?

© JCERT not to be republished

(क) कैंसर (ख) पीलिया

(ग) पोलियो (घ) मलेरिया

प्रश्न (20)– डॉ० चंद्रा ने एम. एस. सी. किस विषय में किया ?

(क) भौतिक विज्ञान (ख) रासायन विज्ञान

(ग) मानव विज्ञान (घ) प्राणिशास्त्र

प्रश्न (21)– मैं अपंग डॉ० मेरी वर्गीज के सफल ---- की कहानी पढ़ चुकी थी। (जीवन/कार्य)

प्रश्न (22)– इधर चंद्रा जिसका निचला --------- है निष्प्राण मांस पिण्ड मात्र। (अंग/धड़)

प्रश्न (23)– एक बर्ष तक कष्ट साध्य ------- चला। (व्यायाम/उपचार)

प्रश्न (24)– भारीतय एवं पाश्चात्य --'------- दोनों में उसकी समान रूचि थी। (गायन/संगीत)

प्रश्न (25)– प्रत्येक परीक्षा में सर्वोच्च स्थान प्राप्त कर चंद्रा ने ----जीते। (स्वर्ण पदक/ पुरस्कार)

पाठ्यपुस्तक के प्रश्नोत्तर

प्रश्न (1)– डॉ० चंद्रा से पहली बार मिलकर लेखिका ने क्या अनुभव किया ?

उत्तर– डॉ० चंद्रा से पहली बार मिलकर लेखिका को अपने जीवन का खालीपन बहुत छोटा लगने लगा। लेखिकाको महसूस हुआ कि डॉ० चंद्रा को विधाता ने कठोरतम दंड दिया है किंतु उसे वह नतमस्तक हो कर झेल रही है, विधाता को कोसकर नहीं।

प्रश्न (2)– लेखिका को डॉ० चंद्रा देवांगना–सी क्यों लगी?

उत्तर– लेखिका को डॉ० चंद्रा देवांगना–सी इसलिए लगी कि उसने स्थिति के प्रत्येक कठोर आघात को अति मानवीय धैर्य एवं साहस से झेला।

प्रश्न (3)– वीर जननी का पुरस्कार किसे मिला? उसे यह पुरस्कार क्यों दिया गया?

उत्तर– 'वीर जननी' का पुरस्कार डॉ० चंद्रा की माँ शारदा सुब्रह्मण्यम को मिला। उन्हें यह पु. रस्कार इसलिए मिला कि वह एक ऐसी दृढ़निश्चयी, संघर्षशील, साहसी तथा ममतामयी माँ थी जो अपने दिव्यांग पुत्री के संघर्ष में हर कदम पर साथ रहती हैं।

© JCERT not to be republished

प्रश्न (4)– 'अपराजिता' अपने नाम को किस प्रकार सार्थक करती है?

उत्तर– 'अपराजिता' का अर्थ होता है– जो कभी पराजित न हो डॉ० चंद्रा को लेखिका ने 'अपराजिता' संबोधित किया है। वास्तव में डॉ० चंद्रा में असीम धैर्य, दृढ़ इच्छाशक्ति और अद्‌भुत लगन हैं वह अपनी विकालांगता पर विजय प्राप्त कर सफलता का शिखर छू लेती है। विषम और विकट परिस्थितियों में भी अपराजित बनी रहने वाली अपराजिता अपने जीवन की कठिन परिस्थितियों और चुनौतियों का साहसपूर्ण तरीके से सामना करके अपने नाम को ही सार्थक करती हैं

प्रश्न (5)– 'चिकित्सा ने जो खोया है, वह विज्ञान ने पाया है' –उपरोक्त पंक्ति को पाठ के आधार पर स्पष्ट करें।

उत्तर– डॉ० चंद्रा की इच्छा डॉक्टर बनने की थी। इसलिए वह मेडिकल प्रवेश परीक्षा में शामिल होती है और परीक्षा में सर्वोच्च स्थान प्राप्त करती है। किन्तु उसे यह कहकर प्रवेश नहीं लेने दिया जाता है कि उसके शरीर का निचला धड़ निर्जीव है और वह सफल चिकित्सक नहीं बन पाएगी। लेकिन वह विज्ञान में सफलता के सर्वोच्च शिखर पर पहुँचती है। तब उसके प्रोफेसर कहते हैं कि मुझे यह कहने में रंचमात्र भी हिचकिचाहट नहीं कि डॉ० चंद्रा ने विज्ञान की प्रगति में महान योगदान दिया है। चिकित्सक ने जो खोया अर्थात इतने प्रतिभावान व्यक्ति का लाभ नहीं ले पाया, वह विज्ञान ने पाया अर्थात् उसकी प्रतिभा का लाभ उठाया, जिससे विज्ञान समृद्ध हुआ।

प्रश्न (6)– लेखिका ने लखनऊ के मेधावी युवक को डॉ० चंद्रा से किस प्रकार की प्रेरणा लेने की बात कही है?

उत्तर– लेखिका ने लखनऊ के मेधावी युवक को डॉ० चंद्रा प्रेरण लेने की बात कही है। उस मेधावी युवक का ट्रेन से दायीं हाथ कट गया था और वह इतना दुखी हुआ कि अपना मानसिक संतुलन भी खो बैठा पहले दुख भुलाने के लिए नशे की गोलियाँ खाने लगा फिर मानसिक संतुलन खो कर मानसिक रोगियों के अस्पताल में है। उसने तो मात्र एक हाथ खोकर ही हथियार डाल दिए और इधर डॉ० चंद्रा, जिसका निचला धड़ निष्प्राण मांसपिंड मात्र, सदा उत्फुल्ल है, चेहरे पर विषाद की एक भी रेखा नहीं, बुद्धि दीप्त आँखों में अदमय उत्साह, प्रतिपल प्रतिक्षण भरपूर, उत्कट जिजीविषा और साथ ही कैसी–कैसी महत्वाकांक्षाएँ पाल रखी है। ऐसी महिला से सिर्फ प्रेरण ही ली जा सकती है।

प्रश्न (7)– लेखिका ने डॉ0 चंद्रा की कार्यकुशलता को सुदीर्घ कठिन अभ्यास की यातनाप्रद भूमिका कहा है। लेखिका ने ऐसा क्यों कहा है?

उत्तर– लेखिका ने डॉ० चंद्रा की कार्यकुशलता को सुदीर्घ कठिन अभ्यास की यातनाप्रद भूमिका

© JCERT not to be republished

इसलिए कहा है कि डॉ० चंद्रा आज जितनी कार्य कुशल दिखाई देती है उसके पीछे उनकी कठिन साधना है।

भाषा संदर्भ

प्रश्न (1)– संसार की कोई भी शक्ति इसे रोगमुक्त नहीं कर सकती यहाँ 'रोगमुक्त– का अर्थ है – रोग से मुक्त। आप इसी तरह 'मुक्त' शब्द जोड़कर चार नए शब्द बनाइए।

उत्तर– भ्रष्टाचारमुक्त, दोषमुक्त, क्रोधमुक्त, विकारमुक्त।

प्रश्न (2)– निर्जीव धड़ को मैंने सहारा देकर बैठना सिखा दिया। यहाँ रेखांकित शब्द 'निर्जीव' का विलोम 'सजीव' होगा। पाठ में आए निम्नलिखित शब्दों के विलोम लिखिए –

उत्तर–

शब्द		विलोम शब्द
प्रवेश	–	निकास
अभिशाप	–	वरदान
सुगम	–	दुर्गम
सहिष्णु	–	असहिष्णु
पुरस्कार	–	दण्ड
अचल	–	चल
योग्यता	–	अयोग्यता

प्रश्न (3)– 'मेरी **माँ को** कार चलानी पड़ती है।' ऊपर के वाक्य में रेखांकित पदों पर ध्यान दीजिए यहाँ 'माँ' कर्त्ता कारक है ओर उसके साथ 'को' परसर्ग प्रयुक्त हुआ है। आप जानते हैं कि 'कर्त्ता' का परसर्ग ने है, कर्म कारक का परसर्ग 'को' है। 'को' परसर्ग का प्रयोग कर्त्ता , संप्रदान और अधिकरण कारकों में भी होता है। रेखांकित अंशों पर गौर कीजिए, और कारक का नाम लिखिए–

(क) 1976 में चंद्रा को डॉक्टरेट मिली माइक्रोबायोलॉजी।

© JCERT not to be republished

(ख) राष्ट्रपति को सलामी देती चंद्रा।

(ग) रात को मैं सो नहीं पायी।

उत्तर–(क) कर्त्ता (ख) संप्रदान (ग) अधिकरण

प्रश्न (4)– ''मैडम आप कह रही थीं कि आपके दामाद हवाई के इस्ट–वेस्ट सेंटर में हैं।'' यह एक मिश्र वाक्य है। मिश्र वाक्य में एक मुख्य उपवाक्य होता है और अन्य उपवाक्य आश्रित होते हैं। ऊपर दिए गए उदाहरण में ''आप कह रही थीं''– मुख्य उपवाक्य है और ''आपके दामाद हवाई के ईस्ट–वेस्ट सेंटर में हैं।'' मुख्य उपवाक्य का आश्रित उपवाक्य है। निम्न लिखित वाक्यों में प्रयुक्त मुख्य उपवाक्य और आश्रित उपवाक्य को ऊपर दिए गए उदाहरण के अनुसार अलग–अलग कर लिखिए :–

(क) आप उन्हें मेरा बायोडाटा भेजकर पूछ सकेंगी कि वहाँ मुझे कोई फैलोशिप मिल सकती है?

(ख) एक ऐसी अभिशप्त काया देखी जिसे विधाता ने कठोरतम दंड दिया है।

(ग) जो उदासी उसके चेहरे पर कभ्झी नहीं आने पायी, वह अनजाने ही उसकी कविता में झलक आयी थी।

(घ) मैंने इसी से ऐ ऐसी कार का नक्शा बनाकर दिया है, जिससे मैं अपने पैरों के निर्जीव आस्तित्व को भी सजीव बना दूँगी।

उत्तर–(क) प्रधान उपवाक्य – आप उन्हें मेरा बायोडाटा भेजकर पूछ सकेंगी।

आश्रित उपवाक्य – कि वहाँ मुझे कोई फैलोशिप मिल सकती है?

(ख) प्रधान उपवाक्य – एक ऐसी अभिशप्त काया देखी।

आश्रित उपवाक्य – जिसे विधाता ने कठोरतम दंड दिया है।

(ग) प्रधान उपवाक्य – वह अनजाने ही उसकी कविता में झलक आयी थी।

आश्रित उपवाक्य – जो उदासी उसके चेहरे पर कभी नहीं आने पायी।

(घ) प्रधान उपवाक्य – मैंने इसी से एक ऐसी कार का नक्शा बनाकर दिया है

आश्रित उपवाक्य – जिससे मै अपने पैरों के निर्जीव अस्तित्व को भी सजीव बना दूँगी।

© JCERT not to be republished

प्रश्न (5)— ''मेरी बड़ी इच्छा थी, मैं डॉक्टर बनूँ।'' आप 'डॉक्टर' शब्द पर ध्यान दीजिए। हिंदी में अंग्रेजी स्वर 'ऑ' का आगम हुआ है। इसका उच्चारण 'औ' से थोड़ा अलग है, 'ऑ' के उच्चारण में मुँह को थोड़ा गोलाकार करना पड़ता हैं आप 'काल' और 'कौल' शब्द का उच्चारण शिक्षक की सहायता लेकर कीजिए।

काल (समय), कॉल (बुलाना) , कौल (शपथ) तीनों शब्दों के उच्चारण और अर्थ में अंतर होता है। कुछ ऐसे अंग्रेजी शब्दों की सूची बनाइए जिनका प्रयोग हिंदी में भी धड़ल्ले से हो रहा है।

उत्तर—हॉस्पिटल, टीचर, इंजनियर, पोस्टमैन, स्कूल, कॉलेज, बिल, सिलिंडर आदि।

गद्यांश से संबंधित प्रश्नों के उत्तर

1 — लेखिका ने विलक्षण व्यक्तित्व डॉ० चंद्रा को कहा है।

2 — जीवन किसी का भी पूर्ण नहीं होता, कहीं न कहीं कोई न कोई कमी जरूर होती है। इसे ही जीवन की रिक्तता कहा गया है।

3 — कोसते।

4 — डॉ० चंद्रा विधाता के द्वारा दिए अभिशप्त काया को संघर्ष करते हुए, आनंद की मुद्रा में, ईश्वर को बिना शिकायत किए झेल रही है।

5 — लखनऊ का जो मेधावी लड़का आई. ए. एस. की परीक्षा देने इलाहाबाद गया था। लौटते समय स्टेशन से चाय लेकर चलती गाड़ी पर चढ़ा। चढ़ते समय वह गिर गया और उसका दायाँ हाथ पहिए के नीचे आकर विच्छिन्न हो गया और वह निराशा में डूबकर नशे की गोलियाँ खाने लगा था। लेखिका ने प्रस्तुत वाक्य इसी लड़के के लिए कहा था।

6 — लेखिका ने डॉ० चंद्रा को सबसे पहले उनकी कोठी के अहाते से कार से उतरते हुए देखा।

7 — उस युवक ने जीवन में हथियार डाल दिए थे, जिसका एक हाथ चलती ट्रेन से गिरने पर कट गया था।

8 — डॉ० चंद्रा आई. आई. टी. मद्रास में नौकरी कर रही थी।

9 — डॉ० चंद्रा ने बी. एस. सी. ,एम. एस. सी. एवं पी. एच. डी. की उपाधियाँ प्राप्त की थीं।

10— सभी डॉक्टरों ने चंद्रा के माता—पिता से कहा कि आप पैसा व्यर्थ बरबाद मत कीजिए आपकी पुत्री जीवन भर केवल गर्दन ही हिल सकेगी। संसार की कोई भी शक्ति इसे रोग—मुक्त अर्थात्

© JCERT not to be republished

पोलियो के प्रभाव से मुक्त नहीं कर सकती। इसका उपचार करने से कोई लाभ नहीं है।

11— बालिका चंद्रा को गर्दन से निचला शरीर जब निर्जीव—सा हो गया और डॉक्टरों ने स्पष्ट कहा कि इसका इलाज करने से कोई लाभ नहीं रहेगा तब चंद्रा की माता ने उस अपंगता को अपनी पुत्री के लिए और स्वयं के लिए भी भयानक अभिशाप माना परंतु, उस दशा में भी वे बच्ची के जीवन की भीख माँगती रही और उसके स्वस्थ होने की आशा करती रही। उसने ममता का भाव कम नहीं होने दिया।

12— 'वीर जननी' पुरस्कार डॉ० चंद्रा की माँ श्रीमती शारदा सुब्रह्मण्यम को मिला।

13— डॉ० चंद्रा की माताजी ने यह बात इसलिए कही कि जब उनकी पुत्री को मेडिकल में प्रवेश नहीं मिला तब चंद्रा ने विज्ञान के क्षेत्र में शिक्षा पाकर उच्चतम सफलता प्राप्त की और विज्ञान की प्रगति में महान योगदान दिया। इसी प्रकार शारीरिक दिव्यांगता रही लेकिन बुद्धि कुशाग्र थी।

14— बालिका चंद्रा की इच्छा डॉक्टर बनने की थी। उसने प्रवेश परीक्षा में सर्वोच्च स्थान प्राप्त कर लिया था। परंतु सभी ने कहा कि उसका निचला धड़ निर्जीव होने से वह एक सफल शल्य चिकित्सक नहीं बन सकेगी। विज्ञान की प्रगति में वह योगदान दे सकती है परंतु चिकित्सा के क्षेत्र में नहीं। इसी कारण बालिका चंद्रा डाक्टरी की पढ़ाई नहीं कर सकी।

15—'अपराजिता' कहानी में डॉ० चंद्रा के चरित्र की निम्नलिखित विशेषताएँ व्यक्त हुई हैं :—

(i) अदम्य साहसी — निचला धड़ अपंग होने पर भी चंद्रा अदम्य साहस से अपना सारा काम करती थी।

(ii) जिजीविषा — दिव्यांग होने पर भी उनमें जीने की प्रबल इच्छा थी।

(iii) प्रतिभाशाली — चंद्रा में विलक्षण प्रतिभा थी। वह प्रत्येक परीक्षा में सर्वोच्च स्थान पाती रही।

(iv) प्रसन्नचित्त — अभिशप्त जीवन होने पर भी वह हृदय से प्रसन्न रहती थी।

(v) स्वाबलंबी — चंद्रा अपना सारा काम स्वयं करना चाहती थी। उन्होंने अपनी प्रयोगशाला, व्हील चेयर की व्यवस्था वैसी ही की थी। उन्होंने अपने कार के लिए भी डिजाइन बनाई थी।

(vi) परिश्रमी — चंद्रा काफी परिश्रमी थीं।

© JCERT not to be republished

वस्तुनिष्ठ प्रश्नों के उत्तर

प्रश्न 16— (घ) डॉ० चंद्रा

प्रश्न 17— (क) 1976 ई.

प्रश्न 18— (ग) जिजीविषा

प्रश्न 19. (ग) पोलियो

प्रश्न 20— जीवन

प्रश्न 21— धड़

प्रश्न 22— उपचार

प्रश्न 23. संगीत

प्रश्न 24. स्वर्णपदक

© JCERT not to be republished